पवित्र आत्मा कैसे परिवर्तित करता है

इस प्रश्न पर आम तौर पर गलतफहमी पाई जाती है कि एक पापी के मनपरिवर्तन में पवित्र आत्मा कैसे कार्य करता है जिससे रहस्य बना रहता है। पवित्र आत्मा के काम के सम्बन्ध में उलझन यह नहीं है कि पवित्र आत्मा है या नहीं, या वह काम करता है या नहीं। आम तौर पर इन बातों पर सहमति पाई जाती है।

यह चर्चा अनिवार्य रूप से इस प्रश्न पर नहीं है कि वह पापी के लिए क्या करता है; हम इस बात से सहमत हैं कि वह निरुत्तर करता है, विश्वास दिलाता है और अगुआई देता है। वास्तविक प्रश्न यह है कि वह ये काम *कैसे* करता है।

दो विचार प्रस्तुत किए गए हैं: एक यह है कि वह तत्काल और चमत्कारी ढंग से काम करता है; दूसरा यह है कि वह एक माध्यम अर्थात परमेश्वर के वचन के द्वारा काम करता है। इस विषय पर चर्चा करते हुए यह स्पष्ट हो जाएगा कि कौन सी स्थिति सही है।

आत्मा कौन है?

पहला तथ्य जो स्पष्ट किया जाना चाहिए वह यह है कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व में तीन व्यक्तियों में से एक है। संसार की सृष्टि में उत्पत्ति की पुस्तक के आरम्भ में उसका उल्लेख आता है (उत्पत्ति 1:2)। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर और मसीह के साथ मत्ती 28:19 और 1 यूहन्ना 5:8 जैसे पदों में भी उसका उल्लेख आता है।

आत्मा के लिए अक्सर व्यक्तिगत सर्वनाम इस्तेमाल होते हैं (यूहन्ना 14:16,17,26)। उसके गुण व्यक्तित्व वाले माने जाते हैं। वह सिखाता है (लूका 12:12; यूहन्ना 14:26), बात करता है (इब्रानियों 3:7; 1 तीमुथियुस 4:1) और जानता है (1 कुरिन्थियों 2:11)। वह बिनती करता है (रोमियों 8:26) और शोकित हो सकता है (इफिसियों 4:30)।

जब हम समझ जाते हैं कि पवित्र आत्मा एक बुद्धिमान व्यक्ति है, भूत जैसा आभास नहीं, तो उसके काम करने की प्रतिक्रिया और स्पष्ट हो जाती है। वह लोगों को उसी रीति से प्रभावित कर सकता है जैसे किसी समझदार व्यक्ति से दूसरों को प्रभावित करने की अपेक्षा

की जाती है।

प्रेरितों के समय में मनपरिवर्तन

पवित्र आत्मा के काम करने के ढंग को तय करने का सबसे अच्छा ढंग प्रेरिताई के समय मनपरिवर्तन में उसके योगदान की समीक्षा करना है। प्रेरितों के काम की पुस्तक मनपरिवर्तनों की पुस्तक है। आइए इस पुस्तक में से मनपरिवर्तन की दो घटनाओं को चुनते हैं और देखते हैं कि उनमें से हर एक में आत्मा ने कैसे कार्य किया।

प्रेरितों 2 में उस दिन के बारे में बताया गया है जब आत्मा निरुत्तर और परिवर्तित करने का काम आरम्भ करने आया। उस एक दिन में उसने तीन हज़ार आत्माओं को प्रभावित किया था। उन श्रोताओं में आत्मा ने कैसे अपना काम किया? हम देखते हैं कि उसने यह काम केवल पतरस द्वारा बोले गए *शब्दों* से किया था। वह वही बोल रहा था जो आत्मा उससे बुलवा रहा था (मत्ती 10:20)।

प्रेरितों 8 में इथियोपिया के अधिकारी की कहानी बताई गई है। निश्चय ही वह बिल्कुल सही ढंग से परिवर्तित हुआ था, परन्तु क्या उसे आत्मा ने परिवर्तित किया था? सभी सहमत होंगे कि उसे आत्मा ने ही परिवर्तित किया था। फिर, आत्मा ने उसे प्रभावित कैसे किया? एक बार सरसरी तौर से पढ़ने पर ही पता चल जाएगा कि यह फिलिप्पुस के *सिखाने* से हुआ था, जिसे बोलने में अगुआई पवित्र आत्मा ही दे रहा था।

इन घटनाओं से पता चलता है कि आत्मा ने *वचन* के द्वारा ही काम किया था वचन के बाहर नहीं। जब लोगों ने आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लोगों से वचन सुना, तो उन्होंने आत्मा से ही सुना था। जब इन वचनों के द्वारा वे परिवर्तित हुए, तो वे आत्मा के द्वारा ही परिवर्तित हो रहे थे। जब उन्होंने उस सुने हुए को नकारा, तो वे आत्मा का ही विरोध कर रहे थे (प्रेरितों 7:51,52; नहेमायाह 9:30)। स्तिफनुस ने उन पर पवित्र आत्मा का विरोध करने का आरोप लगाया जिन्होंने उसकी शिक्षा को नकार दिया था (प्रेरितों 7:51)।

आत्मा लोगों को आज कैसे परिवर्तित करता है?

क्या पवित्र आत्मा मन परिवर्तन में आज भी वही करता है जो उसने प्रेरितों के समय किया? हां। आज हमारे पास आत्मा की प्रेरणा पाए हुए लोग नहीं हैं, या हैं? नहीं। आश्चर्यकर्मों का युग समाप्त हो चुका है। परन्तु आत्मा ने उन्हें केवल बातें करने में ही अगुआई नहीं दी थी। उसने उन्हें लिखने में भी अगुआई दी थी। इसलिए हमारे पास आज ''बोलने'' के लिए आत्मा की प्रेरणा से मिले उनके *वचन* हैं। बाइबल आत्मा का वचन है।

इब्रानियों 3:7 में पुराने नियम से एक उद्धरण है जिसे आत्मा की बात कहा गया है। दूसरा पतरस 1:20,21 कहता है कि प्राचीन समय में भविष्यवाणियां आत्मा के द्वारा आईं। 2 तीमुथियुस 3:16 भी इसी प्रकार बाइबल के आत्मा की प्रेरणा से होने का दावा करता है। प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में, यूहन्ना ने कलीसियाओं को चेतावनी दी कि वे सुनें कि आत्मा उनसे क्या कह रहा था। आत्मा की बात को वे यूहन्ना की लिखी बातों पर ध्यान देकर ही

सुन सकते थे।

अब हम देखते हैं कि आत्मा और वचन अपने काम को कैसे करते हैं। दोनों ही जीवन देने (यूहन्ना 6:63), नया जन्म देने (यूहन्ना 3:5; 1 पतरस 1:23) और पवित्र करने के कार्य में लगे हुए हैं (1 कुरिन्थियों 6:11; यूहन्ना 17:17)।

उदाहरण के लिए आइए पवित्रीकरण पर विचार करते हैं और देखते हैं कि इससे हमारा प्रश्न कैसे स्पष्ट होता है। हमें आत्मा और वचन के द्वारा शुद्ध किया जाता है। आत्मा वचन से शुद्ध करता है। आत्मा एक व्यक्ति है; वचन एक औज़ार है। यह आत्मा की तलवार है (इफिसियों 6:17)। कोई व्यक्ति पेड़ को एक कुल्हाड़ी से काटता है। इस कार्य में आदमी और कुल्हाड़ी दोनों का ही बराबर योगदान होता है, परन्तु वह व्यक्ति काम को औज़ार से करता है। आत्मा अपनी तलवार का इस्तेमाल करके काम करता है, इसके बिना नहीं।

सारांश

आत्मा के बारे में बाइबल हमें जो भी सिखाती है, हमें उसकी हर बात को स्वीकार करना चाहिए। वह किसी पापी के हृदय पर कैसे कार्य करता है ? अपने वचन के द्वारा। वह किसी रहस्यमयी ढंग से कार्य नहीं करता। जब हम उसकी शिक्षाओं को स्वीकार करके उसकी आज्ञा मानते हैं, तो हम आत्मा के चलाए चलते हैं। जो आत्मा के चलाए चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं (रोमियों 8:14)। क्या आप आत्मा की बात मान रहे हैं, या उसका विरोध कर रहे हैं ?